वेदान्त आश्रम एवं मिशन की मासिक ई - पत्रिका

वेदान्त पीयूष

वर्ष २५ मार्च - २०२५ प्रकाशन - 03

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त पीयूष

मार्च २०२५

प्रकाशक

वेदान्त आश्रम,

ई - २९४८, सुदामा नगर

इन्दौर - ४५२००९

Web : https://www.vmission.org.in

email : vmission@gmail.com

वेदान्त पीयूष

विषय सूचि

1,	प्रकाशक पृष्ठ	02
2.	श्लोक	05
3.	पू. गुरुजी का संदेश	06
4.	सुविचार	11
5.	वाक्यवृत्ति	12
6.	गीता और मानवजीवन	16
6.	जीवन्मुक्त	20
7.	श्री कौशल्या चरित्र	23
8.	कथा	27
9.	आश्रम-मिशन समाचार	30
10.	आगामी कार्यक्रम	41
11.	इण्टरनेट समाचार	43
12.	लिन्क	44

मार्च 2025

आत्मा तु सततं प्राप्तोऽपि अप्राप्तवदविद्यया।
तन्नाशे प्राप्तवद्भाति स्वकण्ठाभरणं यथा॥

(श्लोक - ४४)

आत्मा नित्य प्राप्त ही है, किन्तु अविद्या के कारण वह अप्राप्तवत् प्रतीत होता है। अविद्या का नाश होने पर आत्मा का उसी प्रकार अनुभव होता है। जैसे अपने ही गले में पड़े हार को खोया हुआ समझ कर ढूंढ़ने पर अपने ही गले में प्राप्त हो गया हो।

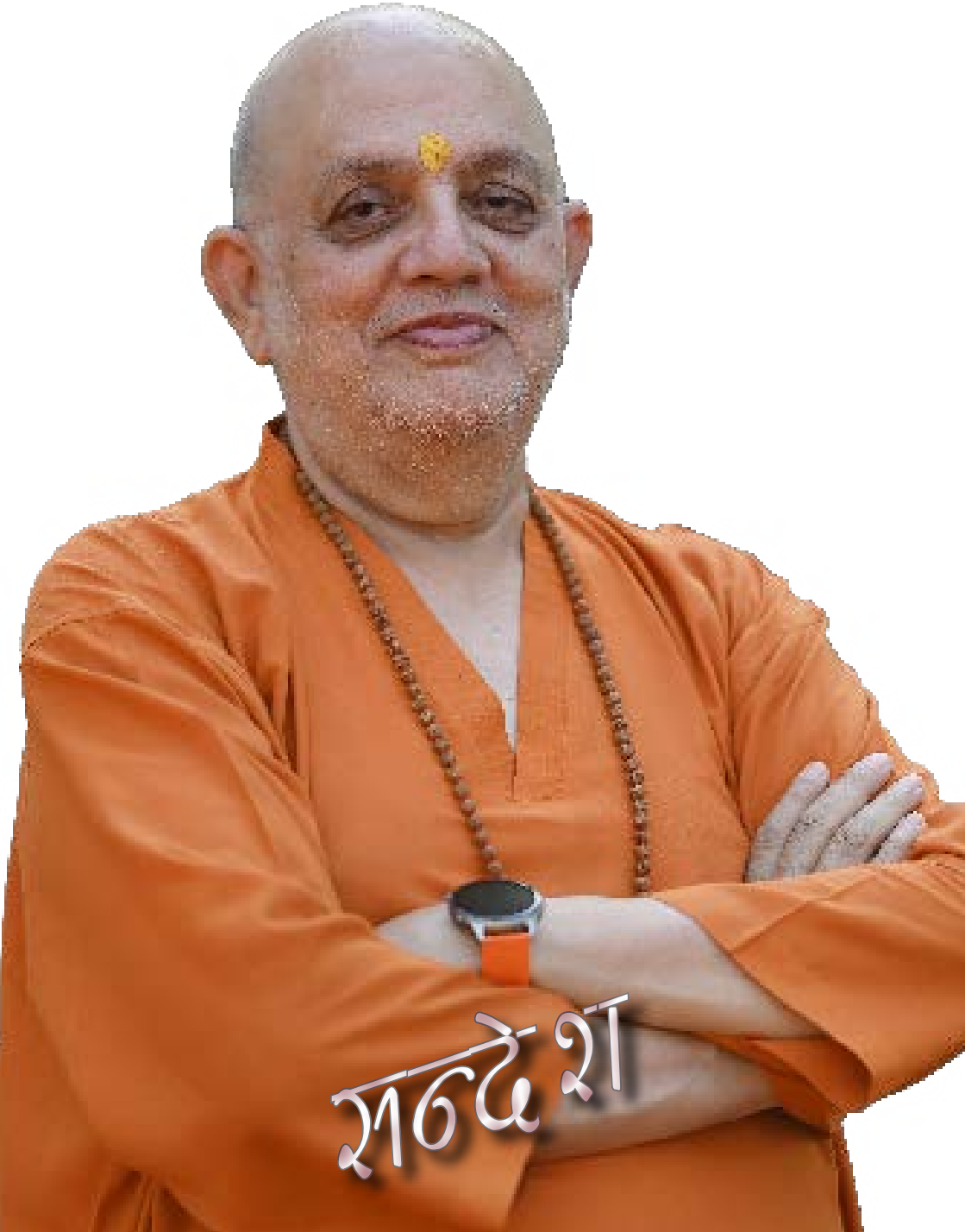
सदेश

पंचक्लेश – ४

पूर्व अंकों में पांच क्लेश के अन्तर्गत अविद्या, अस्मिता, राग और द्वेष रूप क्लेश के बारे में विचार किया। पांच क्लेश के अन्तर्गत पांचवां क्लेश होता है – अभिनिवेश। अभिनिवेश किसी चीज में तीव्र तादात्म्य है। तादात्म्य सम्मोहन का जनक है। जब अपने आपको भूलकर कहीं ग्रसित हो जाते है। यह तादात्म्य यद्यपि क्षणिक रूप से संतापों की निवृत्ति करता है, किन्तु यह कहीं अपने आप को खोना अथवा पलायन करना है। इसके लिए कोई मनोरंजन, भोग आदि करता है। कहीं बहुत तीव्र तादात्म्य करते हैं तो अपनी सब समस्याएं कुछ देर के लिए भूल जाते हैं। यदि मनोरंजन में अपने आपको भूल नहीं पाए तो वह मनोरंजन ही नहीं, एवं बहुत सी चीजों में तादात्म्य आपेक्षित होता है। विषयानंद से आत्मविस्मृति होकर चिन्ताएं दूर होती है, सुकुन सा प्राप्त होता है। बाकी सब से असंग हो पाते हैं। अतः इसमें समस्या नहीं प्रतीत होती है।

यह किसी अनुभूति के लिए सुन्दर गुण भी है। जिसमें भी अभिनिवेश होता है उसे महत्व देते हैं।

यह अभिनिवेश मन का एक अद्‌भुत सामर्थ्य है। मन के दो प्रकार के सामर्थ्य होते है – १. तटस्थतापूर्वक किनारे खड़े हो पाना, २. तन्मय हो जाना। तटस्थता यथार्थ का ज्ञान देती है तो तन्मयता हमें अनुभूति देती है। तटस्थता अपने आपसे इतनी हो कि हम अपने आपको उतनी स्पष्टता से देख पाए जैसे हम किसी अन्य को देख पाते हैं। जब किसीको भी तटस्थ होकर देखते हैं, तब ही उसके अच्छे और बुरे दोनों पहलुओं को अच्छी तरह से देख पाते हैं, उसे समझ पाते हैं। यह सामर्थ्य ज्ञान की प्राप्ति के लिए आशीर्वाद रूप है। अभिनिवेश अर्थात् तन्मयता मन का दूसरा सामर्थ्य होता है। परमात्मा द्वारा दीए गए मन रूपी करण के यह दोनों ही विशेष सामर्थ्य अपने आप में आशीर्वाद रूप हैं।

यद्यपि अभिनिवेश मन का सामर्थ्य हैं, किन्तु जब अभिनिवेश रागादिवशात् होता है, तो वहां मन के सामर्थ्य पर प्रश्नचिह्न लग जाता है, क्योंकि उस अभिनिवेश में स्वतंत्रता नहीं है, मजबूरी व बेबसी है। जो भी कार्य स्वतंत्रता से रहित किसी

के वशीभूत होकर होता है, वह ही बन्धनकारी एवं क्लेशप्रदायी होता है। मन के किसी भी सामर्थ्य का प्रयोग आशीर्वाद रूपा तब ही बनता है, जब वह स्वेच्छा से हो सके। जब मन में रागादि की प्रधानता है, तो यह विवेक नहीं रहता कि हमें अभिनिवेश कहां करना चाहिए! इस प्रकार के अभिनिवेश में बहना होता है कि जहां हमारी कोई उचित-अनुचित के विवेक की उपलब्धता भी नहीं हो पाती है। एक के प्रति अभिनिवेश दूसरे के प्रति उपेक्षा का कारण बन जाता है। वह व्यवहार व रिश्तों में समस्या को ही जन्म देता है, परिणाम स्वरूप मन में विक्षेप स्वाभाविक हो जाता है।

मन के इस अभिनिवेश के सामर्थ्य को शास्त्र दिशा प्रदान करते हैं। जहां हम किसी क्षुद्र विषयों में राग-द्वेष से युक्त अभिनिविष्ट न होकर किसी महान व दिव्य में अभिनिवेश उत्पन्न करें। इसे ही उपासना कहा गया। उपासना मन के इस तन्मयता के सामर्थ्य को दिशा प्रदान करना है, जिससे मन क्षुद्रता से मुक्त होकर महान व दिव्य गुणों से युक्त हो सके, तथा उस महान के प्रति भक्ति के फूल खिला सके। श्रवण के उपरान्त (अपनी ब्रह्मस्वरूपता के ज्ञान के उपरान्त) मन के इस अभिनिवेश के

पंचक्लेश – ४

सामर्थ्य का प्रयोग जब अपनी ब्रह्मस्वरूपता की भावना को दृढ़ करने के लिए होता है, तो उसे ही निदिध्यासन कहा जाता है। जिसमें रागादिवशात् अभिनिवेश नहीं होकर कहीं अभिनिवेश उत्पन्न करने की स्वतंत्रता प्राप्त है, वह ही इस निदिध्यासन रूप साधना कर पाता है, एवं यदि शास्त्रोक्त तरीके से अपने इस सामर्थ्य का प्रयोग किया जाय तो वह लौकिक अनुभूति के लिए तथा अपनी ब्रह्मस्वरूपता में निष्ठा के लिए आशीर्वाद रूप सिद्ध होता है। न्यथा जहां अपने रागादिवशात् अभिनिवेश होता है, तो वह ही क्लेश रूप होता है।

–धन से पलंग मिल सकता है – नींद नहीं।

–धन से पूड़ी–कचौड़ी मिल सकती है – भूख नहीं।

–धन से ऐनक मिल सकती है – आँखें नहीं।

–धन से खुशबू मिल सकती है – नाक नहीं।

–धन से गुलाम मिल सकता है – सेवक नहीं।

–धन से बन्दूक मिल सकती है – हिम्मत नहीं।

–धन से औषधि मिल सकती है – जीवन नहीं।

–धन से मूर्ति मिल सकती है – भगवान नहीं।

–धन से ग्रंथ मिल सकता है – ज्ञान नहीं।

–धन से सत्ता मिल सकती है – प्रेम नहीं।

–धन से बहुत कुछ मिल सकता है

– शान्ति नहीं।

–अतः हे मानव! धन को ही सब कुछ मत समझ।

–प्रभु–चरणों में प्रीति लगाकर

वास्तविक सुख–शान्ति प्राप्त कर।

–यदि मन प्रबुद्ध और आनन्दमय है,

तो ही बाकी सब सार्थक है।

आदि शंकराचार्य

द्वारा

विरचित

वाक्यवृत्ति

स्वामिनी अमितानन्द

यस्य प्रसादादहमेव विष्णुः मयि-एव सर्वं परिकल्पितं च।
इत्थं विजानामि सदात्मरूपं तस्यान्घ्रि पद्मं प्रणतोऽस्मि नित्यम्।।

श्लोक – 20

अजडात्म वदाभाति
यत्सान्निध्याज्जडा अपि।
देहेन्द्रिय मनः प्राणाः
सोऽहमित्यवधारय॥

देह, इन्द्रिय, मन और प्राण जड़ होते हुए भी जिसकी सन्निधि चेतनवत् प्रतीत होते है, वह मैं हूं – ऐसा तुम निश्चय करो।

वाक्यवृत्ति

पूर्व श्लोक से आचार्य ने चुम्बक के दृष्टान्त से हमें अविकारी बताया। हमें यह लगता है कि हम ही विविध कार्य करते है, सोचते है, अनुभव करते है। वस्तुतः हमारी यह उपाधि पंचमहाभूत से निर्मित होने से स्वतः जड़ है। जिस प्रकार पास में रखी हुई कोई घट आदि वस्तु होती है, वैसे ही पंचमहाभूत की बनी हुई यह जड़ उपाधि है। जड़ वस्तु में अपने आप कोई गति व कार्य नहीं हो सकते है। किन्तु यहां हमारा प्रत्यक्ष अनुभव यह हो रहा है कि इसके अभाव में कोई भी कार्य सम्भव नहीं है। फिर भी समस्त कार्य होते हुए प्रतीत होते है, उसको पूर्व श्लोक में जो चुम्बक के दृष्टान्त से बताया, उसी विचार को आगे दोहराते हुए स्पष्ट निष्कर्ष बताते हैं।

हमारा देह, प्राण, इन्द्रियां मन, बुद्धि आदि उपाधि स्वयं जड़ है, तथा अजड़ात्मवत् आभाति। अजड़वत् अर्थात् चेतन वा जीवन्त होने के समान प्रतीत होती है। उसमें हम मैं को जोड़कर कहते

हैं कि हम कर रहे हैं इत्यादि। किन्तु वैसे ही जड़वत् अपने से पृथक् पदार्थों में ऐसी अनुभूति हमें नहीं होती है। इसका कारण है कि जिसकी सन्निधि में यह जड़ उपाधि भी अजड़ अर्थात् चेतन नहीं होते हुए भी चेतन के समान प्रतीत होती है, वह मैं हूं। सुषुप्ति अवस्था में उपाधि और मैं जो चेतन तत्व है, उसे जोड़ने वाली मैं वृत्तिमात्र का अभाव है, मैं का अभाव नहीं है। अतः हमें उस समय कोई अनुभूति नहीं होती है। जिसकी सन्निधि में यह चेतनवान हो उठते है, वह हमारा सत्य है। न कि इस समय जो देहादि से जुड़कर उसके विकारों से विकारी अनुभव करता है, विविध कर्मों का कर्ता-भोक्ता बनता है वह नहीं। इस प्रकार स्वयं के बारे में वह चेतन तत्त्व होने का निश्चय करें।

इस निश्चय की वजह से हम इस संकुचित देहादि के धरातल पर हो रहे विकार व उसके सन्ताप आदि से मुक्त होकर जीएगे।

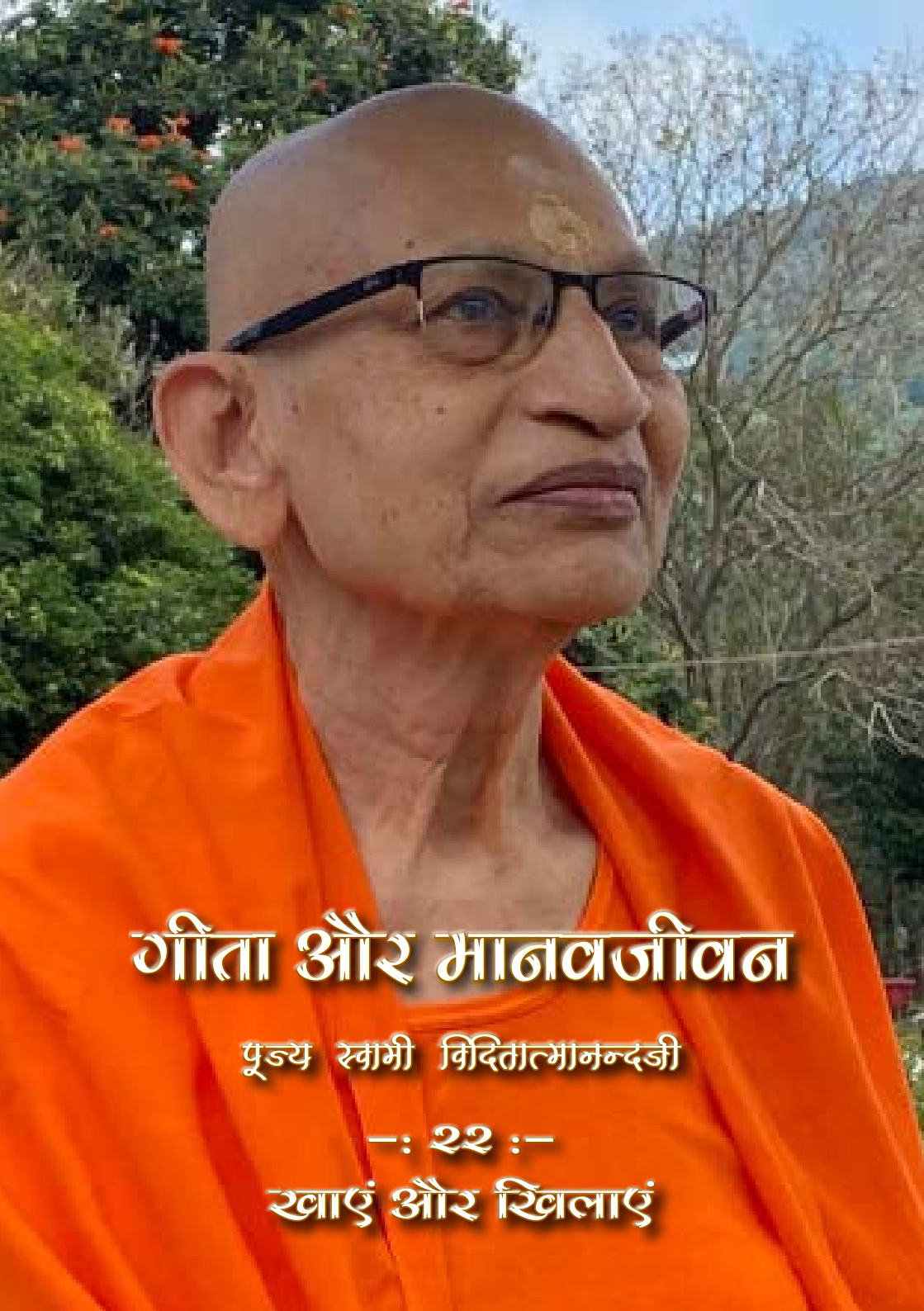

गीता और मानवजीवन

पूज्य स्वामी विदितात्मानन्दजी

–: २२ :–

खाएं और खिलाएं

गीता और मानवजीवन

एक बार देवता और दानवों के बीच बहुत बड़ा युद्ध छिड़ गया। अन्ततः दोनों के मध्य में सुलेह-शान्ति हुई और उसकी खुशी मनाने का दोनों पक्ष ने निर्णय किया। देवताओं ने सौ दानवों को स्वर्ग में भोजन के लिए निमंत्रित किया। दानवों को तो कभी भी स्वर्ग जानेका अवसर प्राप्त हुआ ही नहीं था अतः ऐसा मौका मिलने पर वे बहुत खुश हो गए। किन्तु गहराई में भय था कि देवता लोग उनके साथ उचित व्यवहार करेंगे या नहीं! देवताओं ने उनके लिए बहुत भव्य व्यवस्था करी। बड़ी बड़ी टेबल सजाई। टेबल की दोनों ओर आमने सामने कुर्सी लगाई। बहुत सुन्दर थाली, कटोरी, चम्मच आदि रखे गएं। सभी दानव आमने सामने बैठ गएं। एक के बाद एक व्यंजन परोसे जाने लगे। दानवों के मुंह में पानी आने लगा। सामान्यतः जैसे भोजन परोसा जाने लगें वैसे ही उसे खाने के वे आदि थे। किन्तु उन्हें कहा गया कि, 'यह स्वर्ग है, यहां सब को सब व्यंजन न परोस दिए जाए तब तक नहीं खाया जाना चाहिए।' सब व्यंजन परोस दिए जाने पर वे खाने के लिए अधीर हो उठें। वहां देवताओंने श्लोकपाठ

गीता और मानवजीवन

आदि आरम्भ किए। इतनी लम्बी लम्बी विधियों से दानव लोग परेशान होने लगे। अन्ततः सब विधि सम्पन्न हो जाने पर जहां दानव भोजन खाने को प्रस्तुत हुए, तो देवताओं ने कहा कि, 'अभी देर है। स्वर्ग में कैसे भोजन किया जाता है, उसका आपको ख्याल नहीं है।' ऐसा कहकर एक-एक हाथ लम्बी पतली लकड़ियां मंगवाकर प्रत्येक दानव के हाथ में बांध दी गई। और कहा कि, अब आप भोजन करें।' किन्तु लकड़ी बन्धी होने से हाथ तो मोड़ा नहीं जा सकता था तो फिर कैसे भोजन करे? दानवों को अपना मजाक उड़ता दीखकर अत्यन्त क्रोध आया। और गुस्सा होकर वहां से चले जाने का सोचने लगें। वहां उनमें से किसी बुझुर्ग ने कहा कि, तुम लोग शान्त हो जाओ। शान्त चित्त से सोचो तो कोई तो मार्ग निकलेगा।' अन्ततः बुझुर्ग ने विचार करके एक सुन्दर मार्ग दिखाया और कहा कि, 'यह जो कुछ भी किया गया है, उसके पीछे एक उद्देश्य है। देखो! तुम हाथ मोड़कर अपने मुंह में नहीं खा सकते हो, किन्तु तुम्हारे सामने बैठे हुए व्यक्ति के मुंह में तो कौर रख सकते हो। तुम एक-दूसरो को खिलाओं।' दानवलोग अत्यन्त खुश हो गएं। सबने प्रेम से अन्योन्य भोजन कराया। और बहुत आनन्द लिया। यह तो सामनेवाले

को खिलाने का और साथ-साथ खुद भी खानेका- इस प्रकार दो तरह के आनन्द मिलें। खाने का और खिलाने का।

यह है सेवा का सिद्धान्त। समाज का प्रत्येक व्यक्ति यदि ऐसी भावना रखें कि मैं समाज की सेवा करुं। तो स्वतः सब की सेवा होगी और सब की सेवा मिलेगी। इसमें सेवा करने का और सेवा प्राप्त करने का-दोनों प्रकार का आनन्द मिलेगा। किन्तु मनुष्य यदि स्वार्थवृत्ति से प्रेरित होकर खुद का ही लाभ देखता है, और ऐसा करने में दूसरे को जो नुकसान होता है, उसकी संवेदना नहीं रखता है तो अन्य का और साथ-साथ अपना भी विनाश आमंत्रित करता है।

जीवनमुक्त

— ५७ —

बदरीनाथ

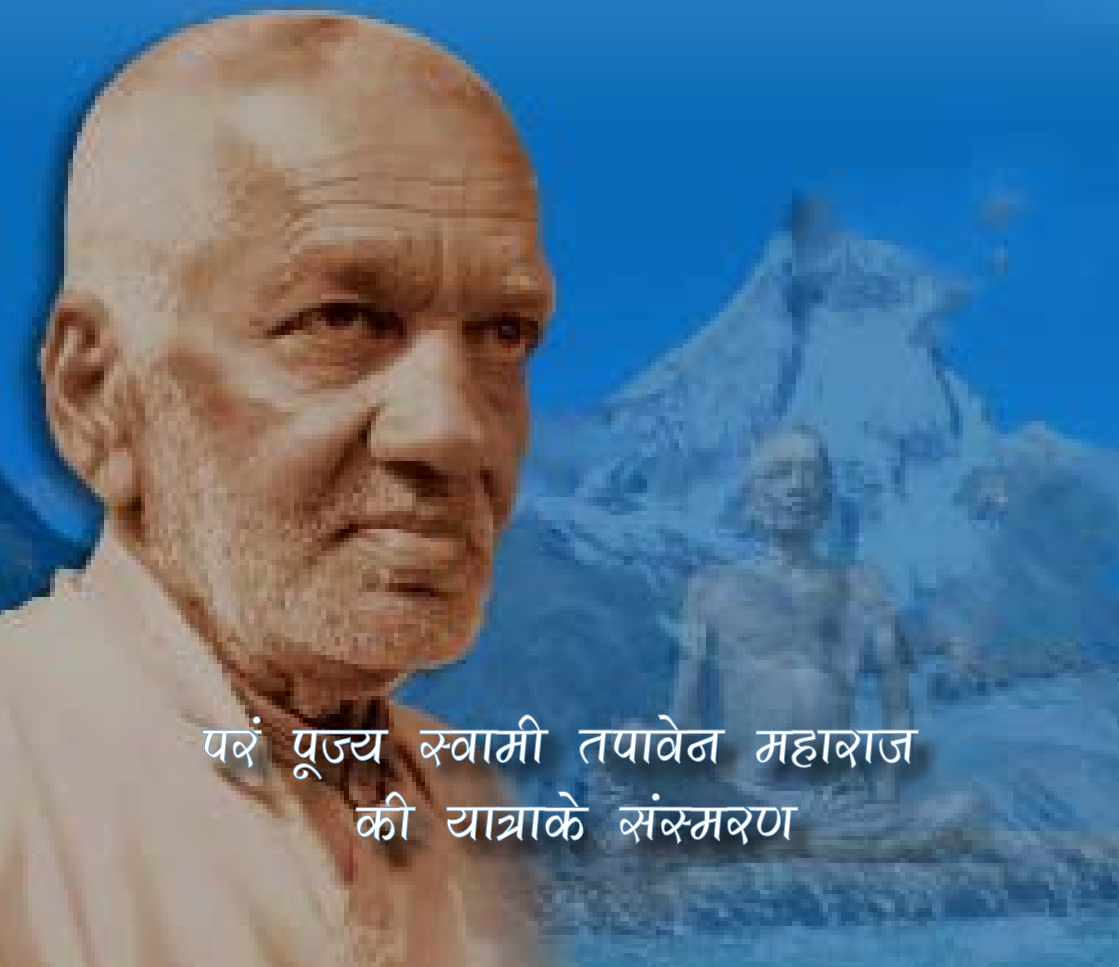

परं पूज्य स्वामी तपावेन महाराज
की यात्राके संस्मरण

जीवन्मुक्त

बदरिकाश्रम नर नारायण नामक पर्वतों के बीच अलकनन्दा तट पर विराजित है। कहा जाता है कि नर और नारायण ने यहीं तपस्या की थी। इन्हींके नाम पर इन पर्वतों का भी यही नाम पड गया है। प्राचीनकाल में यहां भी ऋषि लोग रहा करते थे। यज्ञ आदि रचाते थे। किन्तु अब केवल कुछ देवमंदिर हैं, जिनमें पुरोहितों और यात्रियों के लिए निवास स्थान बने हुए हैं। खाद्य पदार्थ आदि की बिक्री के लिए छोटी छोटी दुकानें हैं। यहां ऐसे ब्राह्मण भी हैं जो यात्रियों से दान दक्षिणा के लिए झगडते रहते हैं। बदरिकाश्रम का यह रूप प्राचीनरूप से कितना भिन्न है।

बदरीवन के दो मुख्य तीर्थ हैं – 'तप्तकुण्ड' तथा कुछ दूर पर स्थित 'ब्रह्मकपाली'। बदरीनारायण का मंदिर भी उन्नत स्थान पर

तप्तकुण्ड के पास सुशोभित है। मंदिर में 'श्रीनारायण' के पास बदरी वन के पूर्व निवासी 'नरनारायण' भी प्रतिष्ठित है। इनके अतिरिक्त एक छोटे मंदिर में श्रीशंकराचार्य की मूर्ति प्रतिष्ठित है। किन्तु यहां व्यास, शुक्र, गौडपाद आदि ऋषियों के नाम पर बने हुए मन्दिर नहीं हैं, जो कि यहां आकर रहे थे।

(श्री रामचरित मानस पर आधारित)

श्री कौशल्या चरित्र

— ०६ —

प्रनवउं परिजन सहित विदेहू।
जाहि राम पद गूढ सनेहू।।

श्री कौशल्या चरित्र

श्रीरामभद्र को राज्यपद की मुक्ति में अपार सुख का अनुभव हुआ था। कैकेयी अम्बा द्वारा मांगे गए वरदान की बात सुनते ही वे आनन्द में भर उठे थे। कैकेयी के समक्ष इस आनन्द की अभिव्यक्ति उनके स्वरूप अनुरूप है। किन्तु जिस समय वे वस्त्र और आभूषण का परित्याग कर रहे थे तब अयोध्या के अगणित नर-नारी उस दृश्य को देखकर विकलित हो रहे थे। उस समय आनन्द की या हर्ष की अभिव्यक्ति नागरिकों की भावना का तिरस्कार होती। ऐसा निर्मम आनन्द राघव के स्वभाव के अनुरूप न था। विषादरहित राघवेन्द्र जहां अपने स्वरूप में अवस्थित थे, वहां हर्ष का अभाव उनके स्वभाव का परिचायक था। इस दृश्य को यदि समग्र धैर्य से कोई देख पाया था तो वे राम मातु ही थी। इस वेष की मर्मान्तक पीड़ा ने आगे चलकर महाराज श्री दशरथ के प्राण ले लिए। किन्तु कौशल्या अम्बा ने उन्हें एक क्षण के लिए भी उपालम्भ की पीड़ा से व्यथित नहीं होने दिया। वनगमन के तत्काल बाद महाराज कैकेयी का महल छोड़कर कौशल्या के भवन में आ गए थे। कौशल्या के स्थान पर कोई अन्य होता तो सम्भवतः यही कहता कि सारे अनर्थ करने के बाद आप यहां क्या करने आए हैं! व्यग्य बाणों से बींधना तो दूर उनकी दशा देखकर वे व्यथा से भर उठती हैं और उन्हें भी धैर्य

का पाठ पढ़ाते हुए कहती हैं, 'महाराज! सारी प्रजा विरह अवधि की चतुर्दश वर्षीय नौका पर आरूढ़ है। इसके कर्णधार भी एक मात्र आप ही हैं। यदि आपने धैर्य धारण किया तो सारा समाज विरह समुद्र को पार कर लेगा, किन्तु यदि आप ही अधीर हुए तो सबका डूबना सुनिश्चित है। चौदह वर्ष के पश्चात् पुनः राम, सीता और लक्ष्मण का आगमन होगा।

महाराज श्री धैर्य धारण करने में असमर्थ रहे। वे स्वयं को सारे अनर्थों का हेतु मानकर प्राण का परित्याग कर देते हैं। इसके पश्चात् ननिहाल से श्री भरत का आगमन होता है और पुनः एक बार कौशल्या अम्बा के विशाल हृदय और व्यक्तित्व का साक्षात्कार होता है। महारानी कैकेयी ने कोई प्रमाण न होते हुए भी षड़यन्त्र की धारणा बना ली थी किन्तु अयोध्या के बहुसंख्यक नागरिकों के अन्तःकरण में श्री भरत के प्रति संशय की भावना विद्यमान थी। ननिहाल से लौटकर जब श्री भरत सर्वप्रथम महारानी कैकेयी के महल में प्रविष्ट होते हैं तब नागरिकों के संशय को और भी अधक बल प्राप्त होता है। उन्हें लगा कि सम्भवतः अयोध्या में जिस घटनाक्रम की सृष्टि हुई उसके मूल सूत्रधार भरत ही हैं। किन्तु इसके प्रतिकूल कौशल्या अम्बा का भरत के प्रति विश्वास अक्षुण्ण था। श्री भरत के प्रति

श्री कौशल्या चरित्र

उनके वात्सल्य का स्रोत रामभद्र की तुलना में भी अधिक निकला। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी लौटे हुए लाल को देखकर उनका वात्सल्य दुग्ध के रूप में हृदय से स्रवित होने लगा। कृशकाया कौशल्या भरत को देखते ही उन्हें हृदय से लगाने दौड़ पड़ती हैं। किन्तु शरीर की दुर्बलता के कारण मूर्च्छित होकर गिर पड़ती हैं। इस कृश और निर्बल शरीर में कितना सबल विश्वास विद्यमान था, इसका परिचय उनके सचेत होने के बाद प्राप्त होता है।

कथा / प्रसंग

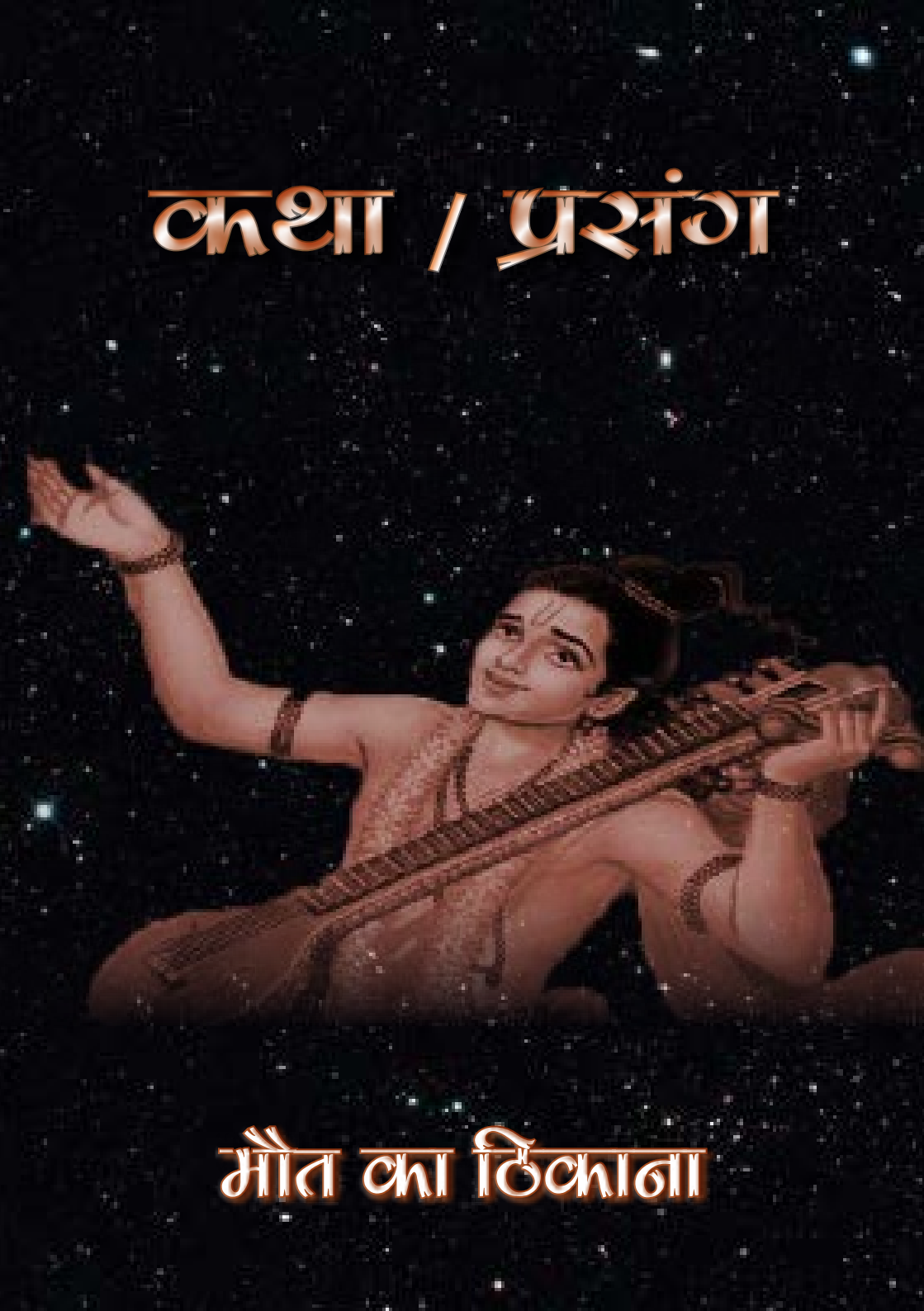

मौत का ठिकाना

मौत का ठिकाना

तीन चोरों ने जंगल में रहने वाले एक महात्माजी से पूछा कि, 'हम पेशे से चोर हैं, हम मौत के दर्शन करना चाहते हैं। आपने देखी हो तो हमें बताएं।' महात्माजी ने एक गुफा की ओर इशारा किया। चोर वहाँ गए और उसने देखा कि गुफा में सोना भरा पड़ा है। वे मौत की बात को भूल गए और सोने को घर ले जाने की योजना बनाने लगे। तय हुआ कि सोने को रात के समय घर ले जाना चाहिए। दिन में खा पीकर आराम कर लेना ठीक होगा।

एक चोर बजार से खाना लेने गया और दूसरा शराब लेने। जब तीनों चोर अलग अलग हुए तो प्रत्येक ने यह योजना बनाई कि शेष दो को मारकर सारा सोना वह अकेला ही हड़प ले। जो चोर गुफा में बैठा था, उसने सोने के टुकड़ों से दो पैनी छुरियाँ बनाई। पहला चोर खाना लेकर आया तो उसके पेट में एक छुरी भोंक दी और लाश पत्थरों के नीचे

दबा दी। दूसरा शराब लेकर आया तो उसके साथ भी ऐसा ही किया। अब गुफा में बैठकर तीसरे चोर ने खाना खाकर और शराब पीकर चलने की तैयारी की। जो चोर मर गए थे, वे खाने तथा शराब में जहर मिला लाये थे। जब तीसरे चोर ने खाना खाया और शराब पी तो थोड़ी देर के बाद वह भी मर गया।

जीवन को सुखी एवं स्वस्थ बनाने के लिए स्वार्थ, लालच तथा अनीति का त्याग करना चाहिए। अन्यथा हम स्वयं ही अपने लिए नरक का द्वार खोल देते हैं। लालच और स्वार्थ की भावना से युक्त मनुष्य समस्त वस्तुओं को बिना प्रयास पाना चाहता हैं और उसके माध्यम से वह अपनी ही मौत को बुलावा देता है।

Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

आश्रम / मिशन समाचार

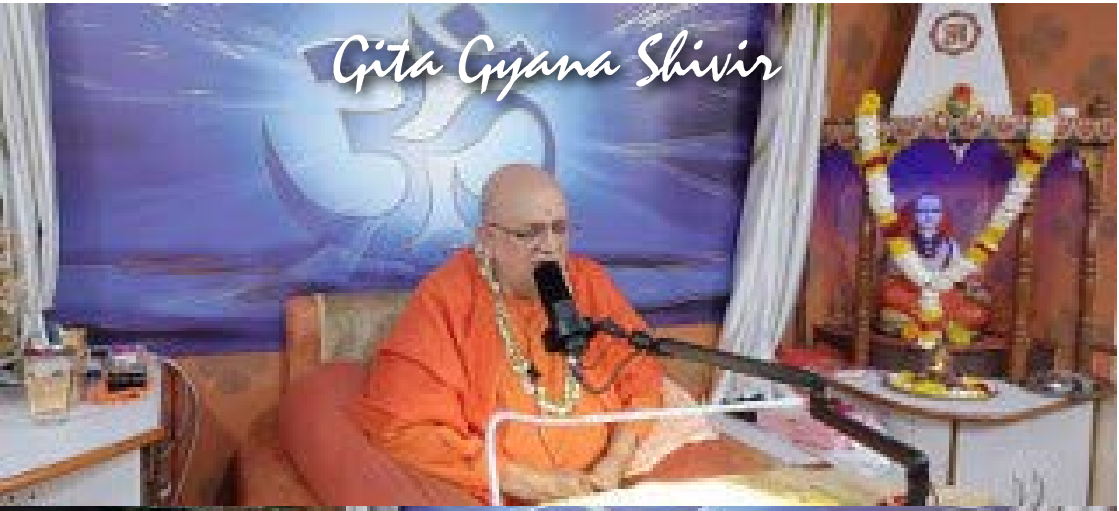

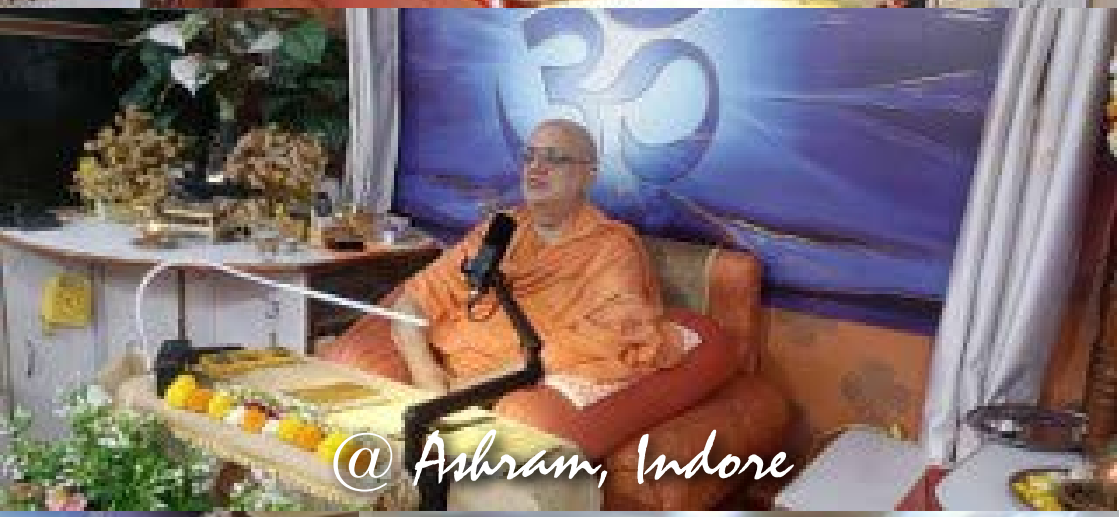

आश्रम / मिशन समाचार

Gita Chapter 5

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

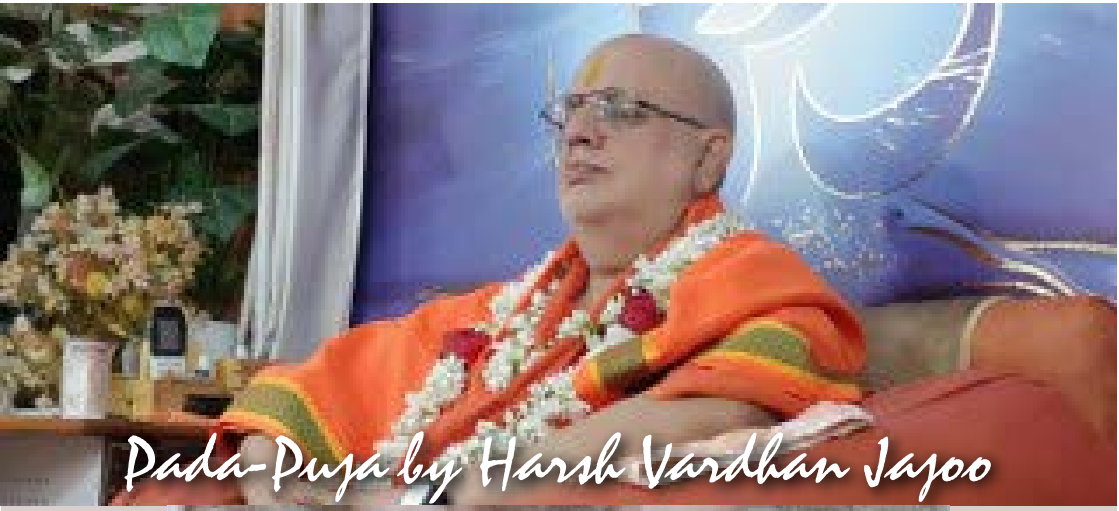

Pada-Puja by Harsh Vardhan Jajoo

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Kirtiben (from UK)

Celebrates her Birthday

आश्रम / मिशन समाचार

श्रीमद् भगवद् गीता

(शांकर भाष्य समेत) नित्य कक्षाएं

प्रतिदिन प्रातः 7.30 बजे से (मंगल से शनिवार)

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी

गीता श्लोकपाठ

प्रति रविवार, सायं 4 बजे से

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

अध्याय - 17 (भक्ति योग)

पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी

आश्रम / मिशन समाचार

ओनलाईन सत्संग

प्रति शनिवार, सायं 4 बजे से

on Google Meet

आदि शंकराचार्य विरचित तत्त्वबोध

पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी

ओनलाईन सत्संग

प्रति रविवार, सायं 4 बजे से

on Google Meet

श्लोकपाठ / ध्यान / सत्संग

पूज्य स्वामिनी समतानन्दजी

INTERNET NEWS

Talks on (by P. Guruji) :

Video Pravachans on YouTube Channel

(☝ Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS

SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA

SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING

MORAL STORIES ETC

Audio Pravachans (☛ Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

Monthly eZines

Vedanta Sandesh - Mar '25

Vedanta Piyush - Feb '25

Visit us online :
Vedanta Mission

Check out earlier issues of :
Vedanta Piyush

Join us on Facebook :
Vedanta & Dharma Shastra Group

Subscribe to our WhatsApp Channel
Vedanta Ashram Channel

Published by:
Vedanta Ashram, Indore